## पद १५८ (राग: पिलु - ताल: भजनी)

गुंतलासी। बापा माझ्या ऋषीकेशी। मज मोकलुनी दीना।।२।।

नको अंत पाह्ं हरी। धांव आतां लवकरी। माणिक जीवींच्या

कां रे न ये तुझ्या मना। दयावंता नारायणा।।ध्रु.।। माधवा रे पुरुषोत्तमा। सकल उत्तमोत्तमा। गुणातीत निर्गुणा।।१।। आतां कोठें

जीवना।।३।।